अनिवार्य-संस्कृत

वन्दना

52SYXN

सिन्धु-गोदावरी-ब्रह्मपुत्रादयो,

जाह्नवी-नर्मदा-सह्यकन्यादयः ।

यद् भुवं स्वर्भुवं कुर्वते सर्वदा,

भारतीयां धरां विश्ववन्द्यां नुमः ।।1।।

हिन्दुमुस्लिम-ईसाईजनाःसिक्खिनो

भ्रातृभावं भजन्तश्चिरं चासते ।

धर्मजात्यादिभिभर्देभावैर्विना

भारतीयां धरां विश्ववन्द्यां नुमः ।।2।।

शब्दार्थ

जाह्नवी=गंगा नदी। सह्य=सह्य नाम का पर्वत। कन्यादयः=सह्य पर्वत की कन्या अर्थात् उससे निकलने वाली कावेरी आदि नदियाँ । यद् भुवम्=जिस धरती को। स्वर्भुवम्=स्वर्गलोक। कुर्वते=बनाती हैं। नुमः=हम सब नमस्कार करते हैं। भजन्तः=रखते हुए। चिरम्=बहुत काल से। आसते=रहते हैं।

अन्वय-

(1) सिन्धु-गोदावरी-ब्रह्मपुत्र-जाह्नवी (गङ्गा) नर्मदा- सह्यकन्यादयः (नद्यः) यद् भुवं

सर्वदा स्वर्भुवं कुरुते, (ताम्) विश्ववन्द्यां भारतीयां धरां (वयम्) नुमः।

(2) हिन्दू-मुस्लिम-ईसाई जनाः सिक्खिनश्च धर्मजात्यादिभिः भेदभावैः विना भ्रातृभावं भजन्तः

(यत्र) आसते (ताम्) विश्ववन्द्यां भारतीयां धरां (वयम्) नुमः।

भावार्थ-

(1) सिन्धु, गोदावरी, ब्रह्मपुत्र, गंगा, नर्मदा तथा सह्य नामक पर्वत से निकलने वाली कावेरी आदि नदियों द्वारा जिस भूमि को निरन्तर स्वर्गभूमि बनाया जाता है ऐसी विश्व वन्दनीया भारत भूमि को (हम सब) नमस्कार करते हैं।

(2) हिन्दू-मुस्लिम-सिख-ईसाई, धर्म, जाति, (रंग, रूप, वेशभूषा) आदि से ऊपर उठकर भाई-चारे के साथ जहाँ चिर काल से निवास करते हैं ऐसी विश्ववन्दनीया भारतभूमि को (हम सब) नमस्कार करते हैं।

शिक्षण-संकेत

(क) 'वन्दना' के पद्यों का अभ्यास कराकर बच्चों से समूह में गान कराएँ।

(ख) पद्यों का अर्थ लिखवाएँ।